A Pratibha Spandan's Journal

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 13, Issue 01, January-June, 2025
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

आधुनिक भारतीय संगीत और मीडिया का अन्तः सम्बन्ध

Shriyani Pandey[1], Dr. Prem Kishore Mishra[2]

1 Research Student, Instrumental Department, Faculty of Music and Performing Arts, Banaras Hindu University, Varanasi
2 Associate Professor, Instrumental Department. Faculty of Music and Performing Arts. Banaras Hindu University, Varanasi

OPEN ACCESS

सारांश

भारतीय संगीत के प्रारम्भिक चरणों का अध्ययन करने से यह ज्ञात होता है कि उस समय प्रचार-प्रसार का मुख्य साधन मौखिक अथवा वाचन क्रिया थी। मानव स्वभाव प्रारम्भ से ही परिवर्तनशील है, यह किसी भी परिस्थितियों से प्रभावित हुये बिना नहीं रह सकता है। विभिन्न कालों में सभ्यता के विकास के साथ-साथ मानव मन की उत्सुकता भी बढ़ती गई, मनुष्य की जिज्ञासात्मक प्रवृत्ति के कारण ही विज्ञान का आविर्भाव हुआ। भारतीय संस्कृति, कला एवं संगीत पर वैज्ञानिकता का बहुतायत प्रभाव पड़ा। अतः विकास के इस क्रम में संगीत के नये-नये सिद्धान्त सामने आये और गहन अध्ययन का मार्ग प्रशस्त हुआ। वर्तमान समय की आधुनिकता को देखते हुये संगीत जगत में मीडिया की एक बहुत ही अहम भूमिका मानी जाती है। इसके कारण ही संगीत के क्षेत्र में संचार माध्यमों का प्रभाव पड़ने से प्रचार-प्रसार के साधन अत्यन्त सरल हो गये । शास्त्रीय संगीत संबंधी विभिन्न जानकारी और सूचनायें साधारण जनता तक पहुँचाने के लिये मीडिया सबसे सरल, उत्तम और समृद्ध साधन सिद्ध हुआ है। अतः इस लेख के माध्यम से भारतीय शास्त्रीय संगीत के उत्थान एवं प्रचार-प्रसार में ईलेक्ट्रानिक उपकरण एवं मीडिया के महत्वपूर्ण योगदान एवं आपसी सम्बन्ध पर प्रकाश डालने की कोशिश की गई है।

मुख्य शब्द :- संगीत, मीडिया, ईलेक्ट्रानिक उपकरण, आधुनिकीकरण

भूमिका

मानव जीवन के विकास में प्रारम्भ से ही जहाँ एक ओर संगीत का विशेष स्थान रहा है, वहीं दूसरी ओर संगीत के विकास में आज मीडिया का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है। वर्तमान समय में संगीत के प्रचार-प्रसार एवं संचार के माध्यम में मीडिया अपनी प्रमुख भूमिका निभा रहा है। मीडिया का सामान्य अर्थ 'मीडियम' या 'माध्यम' समझा जाता है। उसे लोकतंत्र का चैथा स्तम्भ भी माना जाता है। अतः इसके महत्व को इस प्रकार भी समझा जा सकता है कि मीडिया संचार आज हमारे समाज के विभिन्न वर्गों, व्यक्तियों सत्ता केन्द्रों तथा संस्थाओं के बीच एक बहुत बड़े सेतु का कार्य करता है। आज के समय में मीडिया नाम आते ही सामान्य जन इसे समाचार पत्र, पत्रिकाओं, टेलीविजन, रेडियो, इण्टरनेट, सोशल मीडिया आदि अर्थों में समझते हैं। अतः यह कहा जा सकता है कि किसी भी देश की उन्नति एवं प्रगति में मीडिया का बहुत बड़ा योगदान है।

शास्त्रीय संगीत भारतीय संस्कृति, सभ्यता व समाज का दर्पण होता है। जैसे-जैसे मानव सभ्यता एवं संस्कृति एवं समाज में बदलाव आया वैसे-वैसे ही शास्त्रीय संगीत में भी समय के साथ कुछ परिवर्तन होते हुये इसका विकास होता गया। प्राचीन काल में शास्त्रीय संगीत की शिक्षा आश्रमों और संगीत शालाओं में गुरुजनों द्वारा शिष्यों को व्यक्तिगत रूप से दी जाती थी। इसके पश्चात् यह शिक्षा घरानों की दीवारों में सिमट कर रह गयी। प्रारम्भ में संगीत मन्दिरों, गिरिजाघरों, राज दरबारों या छोटी-छोटी महफिलों के सीमित दायरे में बंधा हुआ था। जिसके फलस्वरूप संगीत सामान्य जनों से दूर होता जा रहा था। इसके विपरीत संगीत को विलासिता का साधन मात्र ही समझा जाने लगा था। उस काल में कलाकारों द्वारा दी गयी प्रस्तुति को संरक्षित एवं सुरक्षित रखने का कोई साधन न होने के कारण जनसाधारण तक इसका प्रचार-प्रसार नहीं हो पाता था तथा कलाकारों के साथ ही उनकी कला का भी अंत हो जाता था। संगीत की ऐसी विषम परिस्थितियों को देखते हुये आधुनिक काल के दो महान विभूतियाँ पं॰ विष्णु नारायण भातखण्डे तथा पं॰ विष्णु दिगम्बर पलुस्कर के अथक प्रयत्नो से संस्थागत शिक्षण प्रणाली की स्थापना की गई। इन शिक्षण संस्थानों द्वारा संगीत शिक्षा प्रारम्भ कर संगीत की स्थिति में सुधार हुआ। इन संस्थानों के माध्यम से संगीत को घरानों के सीमित दायरे से निकालकर साधारण जनता के लिये सुलभ कराया गया। जिसके फलस्वरूप विभिन्न वर्गों में संगीत सीखने की इच्छा जागृत हुई तथा साथ ही संगीत का प्रचार-प्रसार निरन्तर गति से होता रहा।

वर्तमान समय में संगीत के क्षेत्र-विस्तार में वैज्ञानिक उपकरणों (ईलेक्ट्रानिक माध्यम तथा मीडिया) ने अपनी विशेष भूमिका निभाई है। इनके माध्यम से जनसाधारण के लिये संगीत सुनना या सीखना सरल हो गया है। इन उपकरणों के माध्यम से प्रसिद्ध कलाकारों की प्रस्तुतियों एवं कलाओं को विशेष संरक्षण प्राप्त हुआ। जिसके द्वारा आम व्यक्ति भी (रिकॉर्डिंग) प्रसारित विभिन्न कार्यक्रमों से लाभान्वित हो सकता है। आधुनिक समय में ग्रामोफोन, रेडियों, ट्रांजिस्टर, टेपरिकॉर्डर, टेलीविजन, वी॰सी॰आर॰, आडियो-विडियो कैसेट, माइक, माइक्रोप्रिंट, कॉम्पैक्ट डिस्क, स्लाईड्स

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 13, Issue 01, January-June, 2025
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

आदि अनेकों ऐसे ईलेक्ट्रानिक उपकरण प्राप्त है जिनमें संरक्षित कलाकारों की कलाओं का प्रसारण दूरदर्शन तथा आकाशवाणी द्वारा निरन्तर होता रहता है।

संगीत के क्षेत्र में मीडिया को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है- प्रिंट मीडिया तथा ईलेक्ट्रानिक मीडिया। मुद्रित माध्यम या प्रिन्ट मीडिया के अन्तर्गत पुस्तकें, समाचार-पत्र, पत्रिकाएँ, जर्नल्स आदि संगीत सम्बन्धी लिखित सामग्री प्राप्त होती है। जहाँ संगीत की शिक्षा मौखिक विद्या द्वारा दी जाती थी वही अब लिखित विद्या द्वारा भी संगीत की शिक्षा दी जा रही है। आधुनिक समय में संगीत की शिक्षा संस्थागत शिक्षण प्रणाली द्वारा दी जा रही है, ऐसे में पाठ्य पुस्तकों की जरूरतें और अधिक बढ़ गई है। संगीत सम्बन्धी विभिन्न विषयों पर शोध करने वाले शोधार्थियों के लिये दत्त संकलन का मुख्य स्त्रोत पुस्तकें ही हैं। प्रिन्ट मीडिया के माध्यम से संगीत सम्बन्धी विभिन्न पुस्तकें तथा पत्रिकाओं का मुद्रित रूप सुलभ होने लगा। 19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध से 20वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में संगीत-विद्वानों ने शास्त्रीय संगीत को समृद्ध करने के लिये अनेकों संगीत सम्बन्धी पुस्तकों की रचना की। उस्ताद मौलाबख्श ने स्वयं संगीत शिक्षण व्यवस्था को सरल बनाने के लिये स्वर लेखन के कार्य को कार्यान्वित किया। प्रारम्भ में संगीतशास्त्र का ज्ञान केवल पाण्डुलिपियों द्वारा ही प्राप्त हो पाता था। परन्तु आधुनिक काल में प्रिन्ट मीडिया द्वारा पुस्तकों की छपाई के माध्यम से विविध संगीत ग्रन्थों, पुस्तकों तथा पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन हुआ जिससे संगीत जगत में नई क्रान्ति आयी। इसके माध्यम से शास्त्रीय संगीत की उत्पत्ति, विकास तथा शास्त्र के नियमों को जानना विद्यार्थियों के लिये सुविधाजनक हो गया। इसके अतिरिक्त वर्तमान समय में प्रेस मीडिया द्वारा ही किसी कार्यक्रम के सफल मंच प्रदर्शन का विवरण प्राप्त होता है कि कार्यक्रम में अतिथि कलाकार कौन थे, किस कलाकार ने क्या गाया, क्या बजाया और किस प्रकार से इसकी समाप्ति हुई। ये सारा प्रारूप प्रिन्टिंग प्रेस द्वारा ही हमारे सम्मुख उपलब्ध होता है। अतः मुद्रण प्रणाली (प्रिंट मीडिया) ने संगीत जगत को एक नई दिशा तथा रोजगार प्रदान किया। ईलेक्ट्रानिक मीडिया के माध्यम से शास्त्रीय संगीत में विशेष संरक्षण प्राप्त हुआ तथा इसके प्रचार-प्रसार पर भी सकारात्मक प्रभाव पड़ा।

प्राचीनकाल में संगीत के क्रियात्मक स्वरूप को सुरक्षित रखने का कोई साधन नहीं उपलब्ध था जिसके द्वारा कलाकारों की कलाओं को जीवित रखा जा सके। इस अभाव की पूर्ति ग्रामोफोन के आविष्कार से हुई। ग्रामोफोन के द्वारा विभिन्न कम्पनियों ने शास्त्रीय संगीत कलाकारों की रचनाओं को रिकॉर्ड करना शुरू कर दिया जिनका कई वर्षों तक प्रचार रहा। इनके माध्यम से जो कलाकार हैं तथा जो अब हमारे बीच नहीं है सभी की शैलीगत विशेषताओं को आसानी से सुना जा सकता था। इसके पश्चात सम्पूर्ण विश्व के लिए उपयोगी एक और इलेक्ट्रानिक कृति (टेपरिकॉर्डर) सामने आयी जो संगीत जगत के लिए अत्यंत आवश्यक थी। टेपरिकॉर्डर के आने से संगीत जिज्ञासु व्यक्ति अपनी ध्वनि रिकार्ड कर उसे सुनकर अपने गायकी के गुण तथा दोषों को समझ सकता है। इसके माध्यम से किसी भी समारोह में कलाकार द्वारा प्रस्तुत की गई कला को रिकार्ड कर उसे सुरक्षित कैसेट में रखा जा सकता है। रिकार्डर के माध्यम से विद्यार्थी विभिन्न घरानों की गायकी को सुनकर उससे लाभान्वित हो सकता है। शिक्षक द्वारा प्राप्त संगीत शिक्षण में भी यह उपकरण बहुत ही सहायक सिद्ध होता है। इसके अतिरिक्त टेपरिकार्डर के माध्यम से अब श्रोतागण किसी भी गायन-वादन को सुनने के लिये महफिलों तथा कार्याक्रमों पर ही आश्रित नहीं है। बल्कि इस उपकरण के माध्यम से संगीत के स्वरों को घर आंगन में गुंजायमान कर उससे लाभान्वित हो सकते हैं। सुनने-सुनाने का सरल और सहज माध्यम होने के कारण टेपरिकार्डर का महत्व और अधिक बढ़ गया तथा इससे श्रोतावर्ग की सीमाएं भी बहुत विस्तृत हो गई। नेत्रहीन विद्यार्थियों के लिए तो यह उपकरण वरदान सिद्ध हुआ है। इन विद्यार्थियों की सुविधा के लिये प्रयोग पक्ष के साथ-साथ शास्त्रपक्ष को भी टेपरिकार्डर के माध्यम से रिकॉर्ड कर दिया जाता है। जिससे वह संगीत की शिक्षा सहज रूप से प्राप्त कर पाते हैं।

संगीत से सम्बन्धित उपकरणों में काम्पैक्ट डिस्क का भी विशेष स्थान है। रिकार्डर की तुलना में यह तकनीकि उपकरण कहीं अधिक विकसित है। कॉम्पैक्ट डिस्क प्रचलन में आने के पहले यह स्थान कैसेट्स ने तो रखा था परन्तु वर्तमान समय की अत्याधुनिक तकनीक ने कैसेट्स की तुलना में कॉम्पैक्ट डिस्क को अधिक उपयोगी माना। इस उपकरण के माध्यम से रिकॉर्डिंग के समय अवांछनीय ध्वनियों के मिश्रण की संभावना को कम कर दिया गया। अतः वाद्यों तथा कलाकारों की आवाज को इसमें सूक्ष्म एवं स्पष्ट रूप से सुना जा सकता है। यह डिस्क धातु की बनी होती है तथा प्लेटिनम की परत चढ़ी होती है। कॉम्पैक्ट डिस्क के माध्यम से अधिक से अधिक पुस्तकों को रिकॉर्ड करके कई वर्षों तक सुरक्षित रखा जा सकता है और जरूरत पड़ने पर कम्प्यूटर के माध्यम से उपयोगी ग्रन्थ को पढ़ा जा सकता है। यह ध्वनि विज्ञान के विकास और अनुसंधानात्मक प्रक्रिया का उत्तम परिणाम ही है जिसकी सहायता से साधारण जनता तक संगीत सम्बन्धी पुस्तक तथा रिकॉर्डिंग को सरल रूप में उपलब्ध कराना सम्भव हो पाया। इसे विज्ञान का चमत्कार ही कहा जायेगा कि संगीत के क्षेत्र में ग्रामोफोन से आरम्भ हुई रिकॉर्डिंग पद्धति की यात्रा टेप रिकार्डर तथा कॉम्पैक्ट

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 13, Issue 01, January-June, 2025
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

डिस्क तक सुचारू रूप से पहुँचते हुये वैज्ञानिक अनुसंधान और प्रयोग प्रक्रिया के माध्यम से एक नये उपकरण डी॰वी॰डी॰ के निर्माण तक जा पहुँची।

20वीं सदी के आस-पास संगीत के क्षेत्र में ध्वनि विस्तरण यंत्रों का प्रयोग भी किया जाने लगा था। इसमें लाउडस्पीकर, माइक इत्यादि की सहायता से धीमी आवाज में किया गया बारीक काम भी कार्यक्रम में उपस्थित सभी श्रोताओं तक स्पष्ट रूप से सुनाई देना सम्भव हो सका था। आज के समय में इसे 'माइक्रोफोन' के नाम से भी जाना जाता है। गायन के साथ-साथ वाद्ययंत्रों के प्रचार में इसका अधिक महत्व रहा। इस यंत्र की अनुपस्थिति में तंत्री वाद्यों (सितार या सरोद) पर किया गया मीड़, मुर्की, कृन्तन आदि बारीक काम पास बैठे सीमित श्रोता ही सुन पाते थे परन्तु आज वादन क्रिया में बारीक से बारीक काम भी ध्वनिविस्तारक यंत्र के द्वारा सभी श्रोता स्पष्ट रूप से सुन पाते हैं। आज के समय में अति सूक्ष्म माइक्रोफोन को वाद्यों में लगाकर ही कार्यक्रम प्रस्तुत किये जाते है जिससे सूक्ष्म से सूक्ष्म ध्वनि भी स्पष्ट रूप से सुनाई देती है।

विज्ञान में अन्य किसी क्षेत्र में शायद ही इतने कम समय में प्रगति की हो जितनी प्रसारण के क्षेत्र में की है। संगीत प्रसारण के क्षेत्र में 'आकाशवाणी और दूरदर्शन' की अहम भूमिका रही है। 'दूरदर्शन' विज्ञान का एक ऐसा चमत्कार है जिसने मानव की वर्षों से संजोई हुई कल्पना को साकार कर दिखाया है। इसके द्वारा संगीत के कार्यक्रमों को सुनने के साथ-साथ प्रत्यक्ष रूप से देखा भी जा सकता है। संगीत एक ऐसी ललित कला है जिसमें कुछ बातों को विशेष महत्व दिया जाता है, जैसे कार्यक्रम प्रस्तुत करते समय कलाकार की शारीरिक मुद्राएँ बैठने का ढंग, वाद्य आदि को पकड़ने का तरीका तथा कम से कम समय में कार्यक्रम को किस प्रकार से अधिक प्रभावी बनाया जा सकता है इत्यादि इन सभी बातों को ध्यान रखते हुये दूरदर्शन कई वर्षों से कला एवं संस्कृति को अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है तथा इसे नई पीढ़ी को हस्तांतरित करने का कार्य कर रहा है। संगीत के क्षेत्र में प्रसारण का दूसरा नाम आकाशवाणी है। आज भारत में आकाशवाणी शब्द अंग्रेजी के 'ऑल इण्डिया रेडियो' का पर्यायवाची बन गया है। आकाशवाणी प्रसारण में संगीत का विशिष्ट स्थान रहा। संगीत और संगीतज्ञों को देश के कोने-कोने तक पहुँचाने में आकाशवाणी ने एक सशक्त माध्यम के रूप में अपनी अहम भूमिका निभाई है। शास्त्रीय संगीत से सम्बन्धित विभिन्न प्रकार के कार्यक्रमों का प्रसारण आकाशवाणी द्वारा किया जाता है।

वैज्ञानिक आविष्कारों द्वारा संगीत संबंधी कुछ अन्य इलेक्ट्रानिक उपकरणों की भी खोज की गयी, जिनका विशेष रूप से सांगीतिक गतिविधियों में ही प्रयोग होता है। इनमें विद्युतीय तानपुरा, ताल माला, स्वरपेटी, लहरा मशीन इत्यादि इलेक्ट्रानिक वाद्यों का विशेष स्थान है। ये उपकरण संगत तथा रियाज के लिये अत्यन्त उपयोगी सिद्ध हुये है। संगीत के प्रारम्भिक विद्यार्थियों के लिए यह बहुत ही सहयोगी उपकरण है।

आधुनिक काल में विज्ञान के अनेक नवीन अविष्कारों में कम्प्यूटर ने अपना अलग ही स्थान ले रखा है। आजकल इसका विशेष प्रयोग सभी शोध छात्रों द्वारा संकलित सामग्री के विश्लेषण हेतु किया जाता है। संगीत जगत के शास्त्र तथा प्रयोग दोनों ही पक्षों में कम्प्यूटर द्वारा विशेष सहयोग प्राप्त होता है। आज संगीत से सम्बन्धित विभिन्न प्रकार के सॉफ्टवेयर का प्रयोग कम्प्यूटर के माध्यम से सरलतापूर्वक किया जा सकता है।

उपर्युक्त के अतिरिक्त यह बात भी ध्यान देने योग्य है कि मीडिया तथा उपकरणों से जहाँ संगीत का ज्ञान प्राप्त करना सुलभ हो गया है वहीं इनसे कुछ सीमा तक हानि भी पहुँच रही है। पहले संगीत के विद्यार्थियों तथा जिज्ञासुओं में गुरुजनों के प्रति जो श्रद्धा की भावना होती थी वह अब अनेकों अविरल प्रयोगों (उपकरणों) के कारण कम प्रतीत होती है। इन उपकरणों के माध्यम से संगीत सुनना तथा सुनकर रियाज़ करना तो सरल हो गया परन्तु विद्यार्थी संगीत की उन सूक्ष्मताओं से अनभिज्ञ होता जा रहा है जो सिर्फ और सिर्फ गुरु द्वारा प्राप्त शिक्षा से ही सम्भव हो पाता है। यहाँ यह बताना भी उचित होगा की किसी भी विषय के हमेशा दो पहलू होते हैं सकारात्मक और नकारात्मक। अतः किसी विषय के सकारात्मक पक्ष को देखना ही उचित माना जाता है। इसका प्रत्यक्ष उदाहरण कोरोना काल में देखने को मिला। इलेक्ट्रानिक उपकरण और सोशल मीडिया के माध्यम से ही संगीत क्षेत्र के विभिन्न कार्यक्रम किये जा रहे थे। आज भी फेसबुक, यू-ट्यूब, इंस्टाग्राम इत्यादि सोशल मीडिया के मंच द्वारा ही संगीत से संबंधित सेमिनार, वेबिनार, कान्फ्रेंस इत्यादि पठन-पाठन के कार्य किये जा रहे है। इसके अतिरिक्त ट्वीटर, व्हाट्सऐप तथा टेलीग्राम इत्यादि मीडिया ऐप के द्वारा संगीत संबंधित सूचनाओं का अतिशीघ्र आदान-प्रदान करना सम्भव हो पाया है। इनके माध्यम से देश के किसी भी कोने में रहकर संगीत सम्बन्धी जानकारी प्राप्त की जा सकती है। अतः सोशल मीडिया आज वह माध्यम है जो विश्व में सभी को एक साथ जोड़ने का काम करता है साथ ही अतिद्रुत गति से समाचारों का आदान-प्रदान कर अपनी सकारात्मक भूमिका अदा करता है।

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 13, Issue 01, January-June, 2025
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

इस प्रकार जीवन के हर क्षेत्र में समय के परिवर्तन के साथ-साथ समाज की बदलती हुई परिस्थितियों के फलस्वरूप क्रमशः परिवर्तन होता आ रहा है। वर्तमान समय में राजनैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, शैक्षिक सभी की गतिविधियों में परिवर्तन हो रहे हैं परन्तु नवीन सोच और विचारों की दुनिया में वैज्ञानिक परिवर्तनों को इस सदी की महान उपलब्धियों में गिना जायेगा। इन्हीं वैज्ञानिक बदलाव के फलस्वरूप ईलेक्ट्रानिक उपकरण या मीडिया द्वारा भारतीय संस्कृति कला एवं संगीत के प्रचार-प्रसार में बहुतायत प्रभाव पड़ा है। आज संगीत को मीडिया से जोड़कर नवीन प्रयोग किये जा रहे हैं। संगीत संस्थानों में संचार से जुड़े विषयों जैसे ईलेक्ट्रानिक उपकरण सोशल मीडिया, प्रिंट मीडिया आदि को क्रमशः संगीत के सैद्धान्तिक एवं व्यवहारिक पक्ष से जोड़कर भी संगीत की शिक्षा दी जानी चाहिये जिससे विद्यार्थी मीडिया तथा उपकरण के क्षेत्र में भी रोजगार प्राप्त कर सके। प्रिंट मीडिया, ईलेक्ट्रानिक उपकरण तथा सोशल मीडिया की विशेष जानकारी होने पर संगीत के क्षेत्र में कला प्रदर्शन, अध्यापन तथा शोधकार्य आदि व्यवसायों के अतिरिक्त संपादक, प्रकाशक संगीत रचनाकार, संगीत निर्देशक आदि क्षेत्रों में भी रोजगार के अवसर प्राप्त किये जा सकते हैं। इसके अतिरिक्त आकाशवाणी तथा दूरदर्शन के कार्यक्रमों के संचालनकर्ता के रूप में भी कार्य किया जा सकता है।

आधुनिक समय में संगीत के लिये मीडिया तथा ईलेक्ट्रानिक उपकरण वरदान सिद्ध हुये हैं। मीडिया ने न केवल शास्त्रीय संगीत के प्रचार-प्रसार तथा विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया बल्कि इसके माध्यम से संगीत को लाखों लोगों तक पहुँचाने में भी सहयोग प्राप्त हुआ है। मीडिया ने भौगोलिक सीमाओं को समेटकर विभिन्न देशवासियों के मध्य निकटता स्थापित कर दी है। जो संगीत के भविष्य के लिये शुभ संकेत हो सकते हैं। आज तीव्र गति से डिजिटल होती इस दुनिया में इण्टरनेट संगीत क्षेत्र में काम करने वाले लोगों के लिये अति आवश्यक है। संगीत का एकल कलाकार हों या किसी सामूहिक कला का हिस्सा हो, संगीतकारों के लिये इण्टरनेट का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा मीडिया (सोशील मीडिया) ही है, जिसने भारतीय शास्त्रीय संगीत के प्रचार प्रसार में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

संदर्भ

शर्मा, डॉ॰ राधिका, भारतीय संगीत को मीडिया और संस्थानों का योगदान, प्रथम संस्करण 2010, संजय प्रकाशन, दिल्ली
शर्मा, डॉ॰ अमिता, शास्त्रीय संगीत का विकास, ईस्टर्न बुक, दिल्ली, प्रथम संस्करण 2000
गौतम, अनीता, भारतीय संगीत में वैज्ञानिक उपकरणो का प्रयोग, कनिष्क पब्लिशर्स, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2002
देवांगन, तुलसीराम, भारतीय संगीतशास्त्र, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल, संस्करण द्वितीय 2010